Himalayan Journal of Social Sciences & Humanities
(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)

ISSN: 0975-9891

चित्रकार दिनेश चन्द्र बडोनीः जीवन तथा कला

t;thr cMFoky
bfrgkl foHkkx हे0न0ब0गढ़वाल विष्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

……

Manuscript Info

सारांश–

……

Manuscript History

Received: 10.07.2016

Revised: 15.09.2016

Accepted: 29.11.2016

पौड़ी नगर निवासी दिनेश चन्द्र बडोनी ने हिमालय तथा हिमालयी परिवेश को दर्शाने वाले अनेक सुन्दर चित्रों की रचना की। उनके बनाये चित्र पौड़ी के उनके प्रशंसको तथा अन्यत्र भी गुणी जनों के पास सुरक्षित हैं। उनकी चित्रकारी के विभिन्न पक्षों तथा उनके जीवन पर प्रकाश्k Mkyu okyk ;g शोधपरक आलेख उनके ऊपर लिखा गया प्रथम लेखन है। तथा हिमालयी कला एवं संस्कृति को प्रकाश में लाने की कड़ी में लेखक का एक अभीष्ट v/;0lk; gA

कुंजी शब्द–

चित्रकार दिनेश चन्द्र बडोUh]
ikMh]x<oky

……

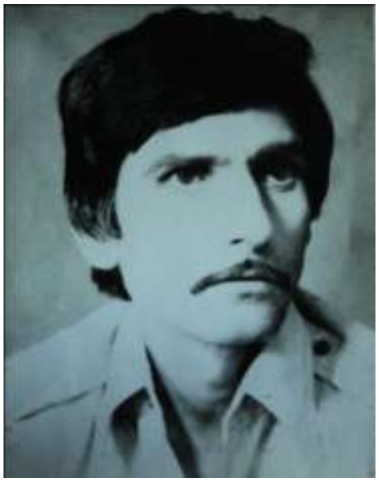

चित्रकला भावना एवॅ अनुभूति की अभिव्यक्ति का सशक्त ek/;e g]गढ़वाल में विभिन्न चित्रकारों तथा गढ़वाली चित्रकला शैली के विषय e lkfgR; miyC/k g[1&5] fdUr dbl ,l fp=dkj g ftudh ifrHkk एवॅ कला का प्रकाशित होना अभी बाकी है। इसी प्रयास में श्री दिनेश pUn cMkuh dh ifrHkk dk lkfgR; iVy ij yku dk ,d i;kl fd;k x;k gA

दिनेश चन्द्र बडोनी का जन्म शैक्षिक अभिलेखों के अनुसार 26 सितम्बर 1942 dk gvk FkkA mud firk ikMh dyDVV e lfifjVUM.V d in l lokfuor g,A ftl le; o yUlMku e lokjr Fk ogh ij दिनेश चन्द्र का जन्म हुआ था। थोड़े समय ckn firk jrue.kh cMkuh th dk rcknyk ftyk e[;ky; ikMh gvk ;gh ij jkeyhyk enku d fcYdy fudV gh edku cuok;k] rc l ey :i l flrkuL; iVVh xke dBM fuokl h रतनमणी बडोनी पौड़ी में ही परिवार सहित रहने लगे। यहीं पर श्री दिनेश का बाल्यकाल, शिक्षा rFkk जीवन का अधिकाशं भाग व्यतीत हुआ। इण्टर मीडिएट पास करने के बाद श्री दिनेश बडोनी ने सेना की

© SHARAD

ukdjh Tokbu dh rFkk cxky bthfu;fjx e jgA fdUr mudk :>ku fp=dyk dh vkj Fkk vr% चार वर्ष नौकरी करने के उपरान्त वह एक दिन अपने जीजा के पास बुलन्दशहर पहुंचे vkj ukdjh uk करने का निश्चय सुनाया, खबर सुनकर उनके पिता भी बुलन्दशहर पंहुचे तथा उनका निश्चय जान लेने के पश्चात उन्हे लेकर रूड़की pgp dj lok l eDr l djok;kA[6]

dN le; ikMh dyDV्ट में नौकरी करने के उपरान्त दिनेश चन्द्र ने चित्रकारी की विधिवत शिक्षk xg.k dju के विचार से पटना के राजकीय शिल्प एवं कला विद्यालय में दाखिला लिया। बाल्यकाल से ही उनका रूझान चित्रकारी की तरफ था और उनके हृदय में एक चित्रकार बनने की ही ख्वाहिश बसी FkhA fp=dkjh d blh tuu d pyr mUgku jktdh; lokvk dk NkMu dk eu cuk;k FkkA 1972 में पटना से चित्रकारी में पांच वर्षीय कोर्स करने के पश्चात उन्होने स्वतंत्र रूप से चित्रकारी करने का निश्चय किया और पौड़ी को ही अपनी कर्मस्थली बनाया।[7]

jkeyhyk enku d lehiLFk viu ird मकान में एक कमरे को उन्होने अपनी चित्रशाला का रूप fn;k vkj mlमें जीवन पर्यन्त विभिन्न विषयों पर अनेक उत्तम कोटि के चित्रों की सृजना की। उनके विषयों का व्यापक कैनवास रहा है किन्तु उनके अधिकाशं चित्र पहाड़ के परिवेश पर ही केन्द्रित हैं। cnhukFk] dnkjukFk] Qyk dh ?kkVh] ged.M तथा पर्वतीय लोक जीवन उनके सर्वप्रिय विषk; jg gA rhFk LFkyk d mUgku fHkUu fHkUk dk.kk l vud fp= fpf=r fd; g Bhd mlh idkj tl fd dkb फोटोग्राफर किसी दृश्य के विभिन्न कोणों से फोटो उतारता है।

noi;kx]ujUn uxj dk jktegy vkfn vud i;Vd egRo d LFkyk dk mUgku viu fp=k dk विषय बनाया है। उन्होने पहाड़ी वेशभूषा तथा लोक आभूषk.kk l llfTtr iorh; ukjh dk Hkh बखूबी चित्रित किया है। इन चित्रों में न सिर्फ पर्वतीय लोक आभूषणों गुलूबन्द, टिहरी की नथ हंसुली vkfn dk fp=.k fd;k x;k g cfYd mld ulfxd lkUn; तथा निश्छलता के भाव को भी कुशलता पूर्वक दर्शाया गया है। बडोनी ने नदी घाटियों,हिमालयी पर्वत श्रृंखला, हिमपात आदि पर्वतीय संन्दर्भो dk Hkh viuh dyk dk fgLlk cuk;kA mudh /keiRuh Jherh lhrk th d lxg e Jh cMkuh d cuk; dfri; lUnj fp= g tk fd ikMh fLFkr mud ikfjokfjd vkokl e ljf{kr gA y[kd dk bu fp=k dk n[ku dk volj ikIr gvk ftue dnkjukFk] ged.M lkfgc]cnhukFk] Qyk dh घाटी,देवप्रयाग,टिहरी का राजमहल तथा आंचलिक आभूषणों से सजी एक पर्वतीय नारी का चित्र है। bUgh e mudk चित्र 'नदी' है जिसमें नदी के नैसर्गिक प्रवाह तथा शान्त वातावरण का चित्रण मन को ekg yrk gA mudh fp=dkjh e iorh; ykd thou] ikdfrd lkUn; rFkk fgeky;h rhFk LFkyk d :i e iorh; thou dk fp=.k gvk gA वह बहुत निष्ठावान तथा संकल्पित चित्रकार थे।

उनके चित्र उनकी उर्जा, कल्पनाशीलता तथा नैसर्गिक प्रतिभा की बेजोड़ परिणिति हैं। वह अपने विषय में पूरी तरह डूब जाया करते थे तथा अपने चित्रों के सृजन में निष्ठापूर्ण उद्योग किया करते। किसी fdlh fp= d cuku e eghuk yxrA mUgku idfr d lkUn; dk u flQ fp=.k fd;k cfYd ml Hkjij ft;k HkhA mud thou dk ,d cMk Hkkx iorh; vpy d nxe LFkyk dh in;k=vk e 0;rhr gvkA[8] mUgku cnhukFk] dnkjukFk] ged.M vkfn LFkyk rFkk mPp fgeky;h cX;kyk dh ,d ugh cfYd vud ckj ;k=k, dhA x<oky fgeky; की शायद ही कोई फूलघाटी हो जिस तक og u igp gkA fgeky;h cX;kyk d rk og nhoku FkA y[kd dk mud fuokl e mud }kjk fd;k x;k dN y[ku Hkh feykA NkVh lh ,d Mk;jh e fgeky;h ;k=vk dk orkUr fy[kk gA uhrkUr LokUr% l[kk; Hkko l fd; x; bl y[ku e lekt] jktuhfr] iorh; i;Vu d fodkl आदि विषयों पर बडोनी के विचारों का सहज ही पता चलता है। यह भी मालूम पडrk g fd og vkyk

© SHARAD

nt! d fgeky;h V'dj FkA mUgksu iorh; vpy d vud ,l nxe ,o ljE; LFkyk dk dk mYy[k fd;k g ftu rd fcjyk gh dkbZ igqprk gkA bu cX;kyk rFkk je.khd LFkyk dk mudk विवरण मन को मोह लेता है। पहाड़ों में पर्यटन के विकास के लिये वो चिन्तित थे। इस विषय में वह fdruh xgjh lkp j[kr Fk Mk;jh e fy[kh mudh bu ifDr;k l irk pyrk g%& ^;fn bu Qyk dh ?kkfV;k] e[keyh ?kkl d enkuk] rkyk vkj je.kh; LFkkuk dk fodkl i;Vu m|kxk dk c<kok देने की दृष्टि से किया गया तो प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक इन प्राकृतिक सुरम्य स्थलों में विचरण करने हेतु vk;x ftll gekj i;Vu m|kx e pkj pkn लग जायेंगे साथ ही विदेशी मुद्रा भी इस देश को vf/kd l[;k e ikIr gkxhA*[9]

मात्र पैंतालीस वर्ष की आयु में 13 नवम्बर 1987 को हिमालयी दृश्यों का वह चितेरा अपने परिजनों तथा प्रंशसकों की आंखों को सदा के लिये नम करता हुआ दुनिया से कूच कर गया। उनd i= पद्मनाभ बडोनी पेशे से इन्जीनियर हैं तथा बम्बई में कार्यरत हैं। उनकी पत्नी श्रीमती सीता बडोनी विचारवान तथा विदुषी महिला हैं। स्वर्गीय बडोनी के कुछ उत्कृष्ट चित्र उनके संगृह में हैं जिन्हे वह fdlh Hkh dher ij viu l vyx ugh djuk pkgrh gA ifrHkk] l?ार्ष तथा समर्पण की इस कथा dk ejk ueu!

lUnHkZ %&

1- बुद्धि वल्लभ डियूँडी एवँ दुर्गावती ड्यिूँडी (1986)ः वै0 मुकुन्दीलाल स्मृति ग्रन्थ पृ0341
2- डॉ0 यशवन्त सिंह कठौच ¼1986½ वही पृष्ठ 314
3- डॉ0 शिवप्रसाद डबरालः उत्तराखण्ड का इतिहास –भाग–12
4- Mk0 okpLifr xjkyk% Hkkjrh; fp=dyk] pk[kEck संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
5- Mk0 t0d0xkfn;ky ,o dle Mkcfj;ky ¼1998½ गढ़वालः संस्कृति,कला एवं साहित्य पृष्ठ 105&128
6- cfgu fot;y{eh l y[kd d lk{kkRij ij vk/kkfjr
7- ogh
8- Lo0 Jh cMkuhth dh /keiRuh Jherh lhrk l y[kd dk lk{kkRdkj
9- Lo0 Jh cMkuh dh Mk;jh l

******

© SHARAD